ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBBIL04292
RNI REG. NO. UPBBIL/2014/66218 PP. NO.- 41-43

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

ज्योत्सना भट्ट (जीवन परिचय)

विभावरी सिंह

असिस्टेन्ट प्रोफेसर–(मूर्तिकला) कला एंव शिल्प महाविद्यालय, ललित कला संकाय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, (उ.प्र.), भारत

सारांश : एक ऐंद्रिक परत जो स्वाभाविक तौर पर किसी स्त्री के रहस्य की तरह खुलती है, एक छोटे से बटन–जैसा बिन्दु जो कि उस परिधान जैसा दिखाई पडता है, जो हजारों बेडों को लहरों मे उतार देगा। यह विशिष्टता निर्बाध ढंग से एक आकर्षक पात्र में कुछ इस तरह उत्तर आती है कि इसकी चर्चा अनिवार्य हो जाती है।

यह मिट्टी में नारी रूपाकार गढ़ने के प्रति उनकी प्रसन्न्ता के बारे में और साथ ही उस कल्पनापूर्ण संसार के बारे में बताता है, जो सहज प्रवृत्ति में शासित है। प्रकृति ने प्रत्येक पक्ष पर अपनी गहरी छाप छोड़ी है और ज्योत्सना भट्ट भी अपनी हर एक निर्मित कृति में प्रकृति के बारे में कही ज्यादा कहती रही है। टील ब्लू उनके काम में बार–बार आने वाली एक रंगत (टोनैलिटी) है, और टील ब्लू की दो तश्तरियाँ प्रकृति की आंतरिकता में संरक्षित लय को प्रतिध्वनित कर रही है।

कुंजी शब्द– स्वाभाविक, रहस्य, परिधान, विशिष्टता निर्बाध, आकर्षक पात्र, कल्पनापूर्ण संसार, तश्तरियाँ ।

इस प्रकृति मय संसार में ही हमारी अवस्थिति है, ज्योत्सना भट्ट भी दार्शनिक थोरो की तरह इसे अपनी कार्य जीविका में विभिन्न पडावों में ढूँढती रही है। रसायन विदों के परिवार से आने वाली ज्योत्सना जैसी मूर्तिकार ही मूर्तिशिल्प सम्बन्धी उस प्रवाह तथा मिट्टी के ग्लेजेज के सरंध होने रहस्य को सुलझा रही है, क्योंकि वह अपनी सिरेमिक निर्मितियों को इसके साथ अलंकृत करती रही है। चाहें वो घबराई हुई बिल्ली हो या चटख रंगीन गौरैया पंक्षी या आत्मभिमानी उल्लू, ज्योत्सना भट्ट की हर कृति में एक मधुर संगीत सुनाई देता है। सुसभ्य, सुन्दरप्रिय, बुद्धिमान, जोशीली इस किसी एक शब्द से कलाकार के व्यक्तित्व का वर्णन नही किया जा सकता। ज्योत्सना भट्ट जी के कार्य में स्वंय ही उनके व्यक्तित्व की छाप देखने को मिलती है। ज्योत्सना भट्ट की का जन्म 1940 में मान्धवी (कच्छ) गुजरात में हुआ था। ज्योत्सना जी ने बचपन से ही कला एवं शिल्प में अपनी रूचि दिखाई। अपने चाचा जी से प्रभावित होकर और अपने आप की हिम्मत से उन्होने कुछ समय शान्ति निकेतन में श्री नन्दलाल बोस के साथ कला की षिक्षा ली और स्वंय को कला जगत के साहसी कार्य में लगा दिया। एक पारंपरिक व्यवसायिक परिवार से होने के कारण ज्योत्सना भट्ट जी को अपने कार्यो में कॉफी विरोधाभासों का सामना करना पड़ा। इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद ज्योत्सना जी कल की षिक्षा लेने सन् 1960 में एम0एस0 यूनिवर्सिटी बड़ौदा गयी।

स्टूड़ियों पॉटरी या फिर किसी अन्य कला–रूप के लिए आधारभूत उपादान तकनीकि और सर्जनात्मकता होते है। तकनीकि का प्रशिक्षण दिया जा सकता है, लेकिन शिल्प–कारिता जैसे अव्यक्त अवयव को भीतर से विकसित करना होता है।

वे देश के हर हिस्से में कार्यशालायें संचालित करती रही है और इस बारे में अपनी गहरी अन्तर दृष्टि तथा साधनों से भी सम्पन्न रही है। अतः सिरेमिक से सम्बद्ध आकस्मिक एवं स्वाभाविक प्रयासों और तकनीकि प्रवीणता को वह दूसरों के साथ सहज बॉटती रही है।

शंखो चौधरी, के0जी0 सुब्रमन्यम और एन0एस0 बेन्द्रे जैसे कुशल शिक्षकों के द्वारा उन्होनें कला के आधारभूत कार्य और उसके आगे की चीजें सीखी और सभी कुछ जो कि सिरेमिक के बारे में था। सन् 1950 के बाद और सन् 1960 की शुरूआत में भारत में पॉटरी कला अपना शैशवावस्था में थी। कुछ कार्यशालाओं और पॉटरी औजारों या जो भी वस्तुए फायर ग्लेजिंग या फायर पॉटरी के लिए उपलब्ध थी। सिरेमिक में ज्योत्सना भट्ट जी के प्रथम तीन वर्शो में सराहनीय भूमिका निभाई।

बडोदरा में प्राप्त प्रशिक्षण ने ही वस्तुतः रूपाकार, टैक्चर और रंग के बारे में उनके बोध को विकसित किया है, लेकिन निश्चित तौर पर ब्रुकलिन (यू0एस0ए0) के प्रारंभिक प्रशिक्षण ने उन्हे उस मिनियल कला परम्परा से जोडा, जो सिरेमिक पात्रों के निर्माण में कम से कम हस्तक्षेप करने की आग्रही रही है। वैज्ञानिक स्वभाव एकाग्रता जहॉ मजबूत पकड की मॉग करती है, वही यह बड़े सामर्थ्य की ओर भी

अनुरूपी लेखक

PIF/5.002 *ASVS Reg. No. AZM 561/2013-14*

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

संकेत है और यह निर्मितियों और स्पेस से परे प्रश्नों की उद्दीपक भी है।

कम से कम अलंकरण करते हुए भी ज्योत्सना भट्ट जी ने अपने पात्रों के सौन्दर्यमूलक रचाव को धारीदार विन्यास दिया है या फिर एक ऐसे पत्ते का आभास दिया है, जो कवि शैली की सम्बोधन गीतों जैसा ही जान पडता है। उनके पात्र सामान्य व्यवस्था को भंग करते नही जान पडते। पात्रों का टैक्चर उनके गहरे चिन्तन का परिणाम है। क्या किसी एक किनारे को या किसी एक पत्ते के एक हिस्से को करीने से काट कर पैटर्न बनाना किसी व्यवस्था को भंग करना है? क्या हम उसे प्रकृति के सदाबहार पहलू की बिखरी सामग्री की एक जुबान कह सकते है? लेकिन ज्योत्सना भट्ट जी जब किसी पात्र को भंग करती भी मो काफी सोच–विचार के बाद ही।

यह सब मेघ मलहार के आलाप जैसा ही होता है। जिसका मधुर सरगम दूध में शहद की सघनता के साथ तैयार किया गया होता है। बादल जैसे लहराते व घुमावदार पात्र शास्त्रीय संगीत के परिवर्तनों से जुड़े तौर तरीके के बारे में बताते है। उनके स्टोनवेयर पात्रों में प्रवाह की गति से अभिव्यक्ति करती है, जन साधना को भी इसी तरह उनके फूल जो गर्दन उठाए स्थापना (इन्स्टालेशन) बन जाते है, उनके निपुण निष्पादन और वस्तुओं के परस्पर सम्बन्धों के बारे में बताते है।

ज्योत्सना भट्ट की कृतियॉ जन संदर्भो से परिपूर्ण है। वह उर्जादीप्त सौंदर्यबोध के साथ विवेचनात्मक नए विचारों तथा प्रक्रियाओं से युक्त अभिव्यक्ति के साथ सामने आती है, जो उनके सुघड़ एवं संतुलित पात्रों से भी पुष्ट होता है।

ज्योत्सना भट्ट तो सुसंगति पर आधारित नैसर्गिक क्रम को बनाये रखने के लिए इसकी विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित करती है। इसे हम उनके गोलाकार पात्रों की श्रृंखला में स्पष्ट तौर पर देख सकते हैं, जिसके एक या दो किनारे होते हैं और जो नित नीरवता लिये एक अंगुल जितनी दूरी बनाए रखते हैं। एक व्यवस्था द्वारा सौन्दर्य कौतुकी प्रवृत्ति का अतिक्रमण करता है और इसमें अब एकांत, अभाव एवं उत्कंठा के भाव भी सम्मिलित हैं, किन्तु इससे उत्साहपूर्ण प्रस्थान की राह भी निकलती दिखाई है। ज्योत्सना भट्ट मोटे तौर पर प्रकृति के निकट रही हैं और पैटर्न को पकड़ने की कोशिश करती हैं। मछली की काही–जैसी रंगत आइबरी ग्लेज की आभा से ऐसी जान पड़ती है, मानों उर्वरता के बारे में बता रही हो। '' मैंने पात्र को 1000 डिग्री के निम्न तापमान पर तपाया था, ताकि वह चटक जायें। मैंने सामान्यतः 1200 से 1300 डिग्री तापमान पर काम करने की अभ्यस्त हूँ'' वह बताती हैं। एक कलाकार की यह विडम्बना है कि उसे तापमान जैसे जटिल और दूरगामी विषयों से जूझना पडता है। और केवल अनुमान से ही उसे कार्य सिद्ध करना होता है। यही वह कला है उन जैसा तकनीकि परिष्कार अभी तक देश के अन्य सिरेमिक कलाकारों में कम ही देखने को मिलता है।

''पूना काका'' जो कि एक पारम्परिक पोटर जो कि सेक्शन के इंचार्ज थे और बी0के0 बरूआ समकालिन पॉटर जो कि इंग्लैंड से प्रशिक्षण लेकर आये थे। इन लोगों का ज्योत्सना भट्ट जी के शुरूआती समय सराहनीय सहयोग रहा। ज्योत्सना भट्ट जी की इला चौधरी जी से अच्छी मित्रता थी। वे पेशे से एक पेंटर थी, और उस वक्त औपचारिक रूप से सिरेमिक स्टूडियों की छात्रा थी। दोनों में गहरी मित्रता हुई और इरा जी ने उनके लिए एक अच्छे साथी और सलाहकार की भूमिका निभाई। ज्योत्सना जी की कला में जहॉ पारम्परिक भारतीयता का एहसास होता हैं, वही पश्चिमी कला में महारत के लिए भी उन्होने गहन अध्ययन किया।

ज्योत्सना जी की मुलाकात अपने हसबैंड ज्योति भट्ट (एक चित्रकार फोटोग्राफर और प्रिन्ट मेकर) तब हुई, जब वे दोनो ही एम0एस0 यूनिवर्सिटी में पढ़ रहे थे। ज्योत्सना जी के कलाकार बनने में उन्होंने भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1965 में जब ज्योति भट्ट जी यू.एस.ए. के प्रॉट इन्स्टीट्यूट जो कि न्यूयार्क में है प्रिन्टमेकिंग का काम सीखने गये उनके साथ ही एक वर्ष तक सिरेमिक्स की शिक्षा ब्रुकलिन म्यूजियम आर्ट स्कूल में ली। अमेरिकी कलाकारों की कला एवं वहॉ के म्यूजियम को देखकर ज्योत्सना जी की कला में नये आयाम जुड़ गये। बड़ौदा वापस आकर उन्होंने दुबारा एम.एस. युनिवर्सिटी स्कल्पचर में पोस्ट डिप्लोमा कोर्स में ज्वाइन की उन्होंने अपने कार्य को आगे बढ़ाया और पॉटरी में ग्लेज पर काफी कार्य किया। सफेद ग्लेज में वह हल्का लाल रंग लाने का प्रयास करती हैं जिससे उन्हें एक अलग तरह का टोन मिलता है। ज्योत्सना भट्ट जी के कार्य में नैसर्गिकता बनाये रखने के लिए विशेष ध्यान रखती हैं इसे हम उनके गोलाकार पात्रों की श्रृंखला में स्पष्ट तौर पर देख सकते हैं। एक व्यवस्था द्वारा सौन्दर्य प्रवृत्ति पर आक्रमण करता है और जिसमें अब एकांत अभाव व उत्कंठा का भाव भी सम्मिलित होता है और इससे उत्साहपूर्ण प्रस्थान की राह भी निकलती है।

आपका लगाव अधिकतर प्रकृति से ही रहा और आप प्रकृति से ही कुछ पैटर्न पकड़ने की कोशिश करती हैं जैसा कि आपके कार्य पर स्वतः दिखाई देता है मछली की काही जैसी रंगत आइबरी ग्लेज की आभा ऐसा जान पड़ता

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-03, No.-II, Issues-15YEAR-2014 Extra

है, मानो वह उर्वरता के बारे में बता रही हो। आपका कार्य हमेशा प्रयोग पर ही आधारित रहा नित नये प्रयोगों के द्वारा आप अपने कार्य पर मजबूत पकड़ बना पाईं। कम से कम अलंकरण करते हुए आपने पात्रों को सौन्दर्य मूलक, धरीदार विन्यास दिया है, या फिर कहीं एक पत्ते जैसा आभास दिया है जो कवि शैली की संबांध गीत जैसा जान पड़ता है। किसी पॉट को यदि भंग करना होता है तो वह भी काफी सोच विचार के बाद।

आपके द्वारा दिये गये स्टोनवेयर पात्रों में गति जिस सरलता से अभिव्यक्ति करती है। उससे स्पष्ट है कि आपने सौन्दर्य के साथ मेघ साधना को संक्रमित करने में सफल रही हैं इसी तरह से उनके फूल जो लम्बी गर्दन उठाये स्थापना (इन्स्टालेशन) बन जाते हैं। आपकी कृतियॉ ऊर्जा दीप्ति, सौन्दर्य बोधक के साथ प्रक्रियाओं से युक्त अभिव्यक्ति के साथ सामने आती हैं। जो उनके सुघड़ एवं संतुलित आन वाले पात्रों से भी पुष्ट होता है।

कार्य शैली

टेक्निक– ज्योत्सना भट्ट जी की टेक्निक बहुत ही सरल है। वे अपने कार्य में स्टोनवेयर जिसमें चाइना क्ले, फायर क्ले, फलेस्पार, क्वार्डस को मिलाकर इस्तेमाल करती हैं जिसे स्टोनवेयर कहते हैं। इस मिट्टी का प्रयोग अपने कार्यों में करती हैं तथा अपने पात्रों को चाक, क्वाइल, स्लैब विधि द्वारा अपने कार्यों को अपने मनोनुसार आकार देने में ज्योत्सना जी सक्षम हैं। इन विधियों द्वारा ज्योत्सना जी ने अपने कार्यों में प्रकृति की असीम छाप छोड़ी है।

टेक्चर– कम से कम अलंकरण करते हुए भी ज्योत्सना जी ने अपने पात्रों में प्रकृति के प्रत्येक पक्ष पर अपनी गहरी छाप छोड़ी है। चाहे जो घबराई हुई बिल्ली या चटक रंगीन गौरैया पक्षी या आत्मभिमानी उल्लू हो। ऐसे ही कोई संवेदात्मक विषय जैसे कि एक उल्लू या कली सहित खिला हुआ एक फूल यह उनकी टयूलिप–श्रृंखला से सम्बद्ध है। वह बताती है '' आइवेरी एक तरह का सफेद ग्लेज होता है। जिसमें हल्की लाली लाने की कोशिश में एक प्रकार का खास तरह की ब्लश टोन मिल गया।

पात्रों का टेक्चर उनके गहरे चिन्तन का प्रमाण है। किसी एक किनारे या पत्ते के एक हिस्से को करीने से काटकर पैटर्न बनाना अतः किसी व्यवस्था को भंग नहीं करना एक कुशल सोच है। अतः हम उसे प्रकृति एक जुबान कह सकते हैं। उनके पात्र में बादल जैसे लहराते घुमावदार पात्र स्टोनवेयर मिट्टी में सरलता से बनाये हैं।

ग्लैजिंग टेक्निक– आइवेरी एक तरह का सफेद ग्लेज तथा टील ब्लू ग्लेज का प्रयोग अपने पात्रों में बहुताय से किया है। चाहे वह एक अकेली मछली अपने वलयों कसाथ कम, वस्त्रों की चुन्नट दिखती है। यह कमाल आइवेरी ग्लेज के कारण हुआ। नीले और हरे रंग के साथ उन्होंने अपने कार्यों को प्राकृतिक सौन्दर्य देने के लिए पृथ्वी के प्रकृति रंगों का इस्तेमाल किया है। उनके कार्यों का एक और आभार स्तम्भ फायरिंग है। सेरेमिक कार्यों में फाइरिंग का विशेष योगदान दिखाई देता है। हाथों द्वारा उन्हें अपने कार्यों को सटीक टेक्चर रंग, टोन और स्पर्श दिया है।

टम्प्रेचर – ज्योत्सना जी मोटे तौर पर प्रकृति के निकट रही हैं। उन्होंने अपने पात्रों को पकाने के लिए 1200 से 1300 डिग्री के तापमान पर काम करने पर अभ्यस्त हैं। वह बताती है एक कलाकार के लिए यह विडम्वना ही है कि उसे तापमान जैसे जटिल और दूरगामी विषयों से जूझना पड़ता है और केवल अनुमान से ही उसे कार्य सिद्ध होता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. ललित कला अकादमी, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
2. अमर नाथ झॉ, पुस्तकालय, कला एवं शिल्प महाविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ।

*****